शंबूक

(अंगिका खण्ड काव्य)

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र'

चन्द्रकान्ता प्रकाशन, कटहरा (813213)

कृति	:	शंबूक (अंगिका खण्ड काव्य)
कृतिकार	:	**हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र'** ग्राम+पो०-कटहरा सुलतानगंज (भागलपुर) ८१३२१३
सम्प्रति	:	शिक्षक, रा० मध्य विद्यालय कुमारपुर, कटहरा (सुलतानगंज)
महामंत्री	:	अखिला भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच
सम्पादक	:	अंगप्रिया / मंजिल
प्रकाशन तिथि	:	दशहरा 2009
सर्वाधिकार	:	© प्रवीण कुमार 'प्रणव' कटहरा (भागलपुर)
शब्द संयोजन, मुद्रण व आवरण	:	मोदी ऑफसेट प्रिंटर्स आत्माबाजार, पहली मंजिल, सुलतानगंज (भागलपुर)
प्रकाशक	:	चन्द्रकान्ता प्रकाशन, कटहरा
सहयोग राशि	:	50/-

SAMBUK (KHAND KAWYA)
By Hira Prasad 'Harendra'

अवलम्बन आरू आभार

राम चरित मानस संसार के अलौकिक ग्रंथ छेकै, जेकरा सें भारतवासी के पहचान देश–विदेश में होय छै। मानस के हजार पात्रों में ही सही एक पात्र 'शंबूक' छेकै। महर्षि शंबूक के कथा ढेर पढ़ै–सुनै के अवसर प्राप्त होलै। सरिता मुक्ता रिप्रिंट सेट (जे सरिता पत्रिका के कटिंग छेकै) में बिस्तार सें पढ़लियै। पटना सें प्रकाशित मासिक पत्रिका शंबूक भी देखलियै।

आजकों वातावरण में मानव विकास के लक्ष्य के ओर उत्तरोत्तर अग्रसर तें छै, वहीं मानवीय मूल्य आरू नैतिकता हास्यपूर्ण छै। ई परम्परा प्राचीन कालों सें आय ताँय पीछा नैं छोड़नें छै। 'मानस' के उपेक्षित पात्र महर्षि शंबूक कें प्रकाश में लानै के हमरों ई प्रयास के दर्पण में विवेकी आपनों बिम्ब कें देखें पारतै। आधुनिकता के दौड़ में उपेक्षितों के प्रति चिन्तनशील होना कोय सामान्य बात नैं छेकै। ई सोच के धरातल पर वहें व्यक्ति आबें पारें, जौनें कहियो उपेक्षित कें देखनें–परखनें छै। ओकरों सुख–दुख में सहभागी रहलों छै आरू अंत:करण संवेदनात्मक अनुभूति सें लबालब भरलों छै।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम निषाद राज गुह कें गला लगैलकै आरू शबरी भिलनी के जुट्ठों बैर खैलकै, ई मर्यादा के उज्ज्वल पक्ष छेकै मगर वोही रामें विद्याभ्यास आरू जोग–जप–तप में रत एक महर्षि कें ई कहतें होलों कि तोंय शुद्र होय कें ब्राह्मण होय के धृष्टता करनें छैं, तोरों अपराध अक्षम्य छौ, तों वध के काविल छें, गला घोटी देलकै, ई एक दोसरों पक्ष छेकै। ब्राह्मणवादी व्यवस्था में मर्यादा ओझराय कें चरमराय जाय तें ऊ मर्यादा के अवमूल्यन नैं होय के की बात छै ! अग्नि परीक्षा में खरी उतरली सीता कें सामान्य जन के बातों पर, बिना समुचित बिचार करलों वनवास भेजी देना की मर्यादा कें कलंकित नैं करै छै?

रामचन्द्र के राजों में शूद्र द्वारा जोग–जप–तप करै के पापों सें एक ब्राह्मण के बेटा मरी जाय छै। ई बात कोय मनगढ़न्त नैं, पुष्टि में राम चरित मानस के पंक्ति देखियै–

रघु दिलीप शिवि सगर नरेसा। अमित प्रभाव भए अवधेसा।।
पितु जीवत सुत त्यागहु प्राणा। प्रभु अन्तर्यामी सुनि काना।।

(रघु, दिलीप, शिवि, सगर सब बड़ा प्रतापी अयोध्या के राजा होलै मतर ऐसनों कभी नैं होलै कि पिता कें रहतें–पुत्र प्राण त्यागी देलकै।)

प्रभु चित देखि गगन भइ वानी। शूद्र तपै सुनु सारंग पानी।।
बिंध्याचल गंभीर बन माहा। द्विज सुत हेतु मरन मरनाहा।।

(बिंध्याचल पर्वत के गंभीर वन में शूद्र तप करै छै, यही लेली ई ब्राहमण के बेटा मरलै।)

यहाँ सम्पूर्ण मानस में शूद्र के नाम नैं बोललों गेलों छै। क्षत्री होय कें निर्दोष बालि कें राम द्वारा छिपी कें मारै के बात जब महर्षि शंबूक उठैलकै तें वशिष्ठ जी के उक्ति—

अनुज बधू भगिनी सुतनारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी।।
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकई जोई। ताहि बधे कछु पाप न होई।।

प्रत्युत्तर में महर्षि कहै छै—बड़ों भाय के पत्नी तें माता के समान मगर बालि के मरला पर तारा के साथ, रावण के मरला पर मन्दोदरी के साथ क्रमशः सुग्रीव आरू बिभीषण नें पत्नीवत् व्यवहार करलकै, तखनी धनुष—बाण आरू तरकश कहाँ छेलै? महर्षि शंबूक के बातों के पुष्टि ई पंक्ति सें होय जाय छै जे मानस में 'लव' के द्वारा विभीषण कें कहैलों गेलों छै—

पिता समान बंधु बड़ तोरा। त्रिया तासु लै घर बरजोरा।।
पापी मातु कहै कै वारा। सो पत्नी तेई धर्म तुम्हारा।।
समर भूमि मम सनमुख आवा। लाज होत नहीं गाल बजावा।।

(पिता के समान बड़ों भाय के पत्नी कें तोंय बरजोरी अपनाँ घरों में राखल्हैं। रे पापी ! तों केतना बार माता कही कें पुकारनें होभैं ओकरा तोंय स्त्री बनाय लेल्हैं। रणभूमि में हमरा आगू आबी कें गाल बजाय में तोरा लाज नैं लागै छौ।)

सुग्रीव—तारा के संबंध तिलक रामायण में देखियै—

तारा भी सुग्रीव की, बनी प्रिया दिल खोल।
वाली के प्रसाद में होने लगा किलोल।।
भूल गये सुग्रीव सब, अपने सारे कष्ट।
रूमा—तारा संगमें, हुए रात—दिन व्यस्त।।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर शंबूक खण्ड काव्य के रचना करलियै। कथा शृंखला के मिलान में थोड़ों कल्पना के पुट जरूरी जानी अपनाँ कें नैं रोकें पारलियै। ई काव्य विराट के गोड़ों पर वामन के देलों क्षुद्र उपहार जानी हृदय सें लगैइयै।

अन्त में सुलतानगंज के साहित्यकार प्रोग्रामर जी, सत्यम जी, मोदी जी, आरू पाठक जी के साथें डा. अमरेन्द्र के प्रति आभार नैं व्यक्त करना अन्याय होतै। डा. अमरेन्द्र अहिनो साहित्यकार छेकै जे अन्य साहित्यकार के हृदय कें उद्वेलित करै में उत्प्रेरक के काम करै छै। उनकों उत्प्रेरणा के परिणाम शंबूक अंगिका खण्ड काव्य कें कहना अतिशयोक्ति नैं होतै।

—हरेन्द्र

।। समर्पण ।।

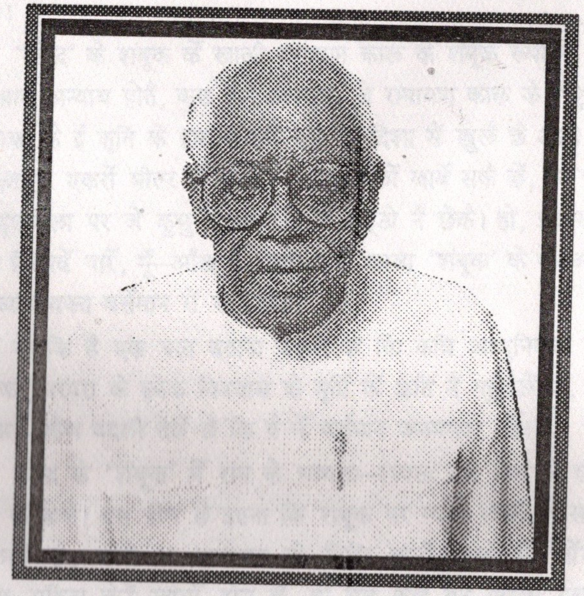

स्व० सरयू प्रसाद सिंह, भूतपूर्व मुखिया

ग्राम+पंचायत-कटहरा कें
जिनकों व्यक्तित्व
पूरे पंचायत में छैलों छै।

'शंबूक' यानी लोकतंत्र रों शव यात्रा

सच्चा कवि भूत, वर्त्तमान आरो भविष्य के मिट्टी, पानी, आग सें कविता के मूर्ति गढ़ै छै। हेनों मूति नैं छूलें–छालें तें टूटै–भागै छै आरो नैं पानी में राखी देला सें गलवे करै छै। हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' के खंड काव्य 'शंबूक' हेने काव्य–मूर्त्ति छेकै।

'हरेन्द्र' के शंबूक कें खाली रामायण काल के शंबूके रूपों में देखना ई कृति के साथ अन्याय होतै, कुछ होने अपराध, जे रामायण काल के शंबूक साथें होलै। अंगिका के ई कृति के द्वार बीसवीं सदी के दिशा सें खुलै छै आरो हुन्हें सें प्रवेश करला पर एकरों भीतर के संसार कें पहचानलों जाबें सकै छें, पर पछियो झड़ोखा सें हुलकला पर जे कुछु झलकै छै, ऊ झूठ्ठो नैं छेकै। हों, झड़ोखा सें मूर्ति के पीठ दिखावें पारें, मूँ–आँख नैं। 'हरेन्द्र' के काव्य 'शंबूक' के मूँ–आँख तें ओकरा में अभिव्यक्त वर्त्तमान रों रूप छेकै।

मजकि है एक बात बताना जरूरी छै कि कवि आधुनिकता कें व्यक्त करै लें कहूँ परंपरा के लोक विश्वास के मूर्ति कें क्षति नैं पहुँचैलें छै, बस, थोड़ों टा ओकरों कोण बदली देलें छै कि वे में वर्त्तमान जगमगाय उठें।

हरेन्द्र के 'शंबूक' में राम के भव्यता–रम्यता वहें छेकै जे लोक मानस के राम के छेकै। बस होय छै इतना कि शंबूक पर न्याय लेली जे सभासद कें राम बोलावै छै, आरो जे सभासद के विधि ज्ञानी हाथों में जोंन किसिम के विधि–संहिता लेनें खाड़ों होय छै, हौ सब कुछ हेने तिरछों रेखा सें उभारलों गेलों छै कि ओकरा में स्वातंत्र्योत्तर भारत के सत्ता, आरो सत्ता के आसपास जमा होलों अफसरशाही साथे–साथ खाड़ों होय जाय छै। न्याय पीठ के न्याय के तस्वीर उभरी आवै छै। हरेन्द्र कृत 'शंबूक' के रचना–प्रक्रिया यहीं सें शुरू होय छै।

ई प्रक्रिया जों–जों आगू बढ़ै छै, काव्य के पात्र–संवाद में एक खास किसिम के परिवर्त्तनो ऐलों चललों जाय छै। लागै तें यहा छै कि एक रामायण कथा आगू बढ़ी रहलों छै, लेकिन ओकरें समानान्तर एकटा आरो कथा सृजित होलें मूल कथा साथें आगू बढ़ै छै। ई नया कथा राम के रूप में सत्ता पर विराजमान आयकों शासक वशिष्ठ ब्राह्मण के रूप में आयकों न्यायविद, पोथी–पतरा रूप में

भारतीय संविधान आरो शंबूक रूपों में स्वतंत्र भारत के पद दलित प्रजा, अभागलों दलित–समाज़ आमना –सामना होय जाय छै।

न्याय, नीति आरों समरसता के स्थापना में कहीं न कहीं आत्महित में लीन ज्ञानी रों अहंकार लोकतंत्र में लोक के विरोधी बनी ऐलों छै, ई बात कें समझावै में ई खंड काव्य जरूरे सहायक बने छै। आरो यहू कि कोन किसिम सें हेनों लोग सत्ता कें भयभीत करी, एक अनाचार के घटित होय के परिस्थिति पैदा करी दै छै। शंबूक आपनों निर्मल स्वभाव सें राम कें जोड़े लें चाहै छै, मतरकि राम के दिमाग में सिर्फ पण्डिते के बात तखनियो तांय घूमतें रही जाय छै। तें कारण स्पष्ट छै।

'शंबूक' काव्य में नैं खाली राम के रूप के रक्षा होलों छै, बलुक शंबूको के। शंबूक के चरित्र–उद्घाटन वास्तें यहाँ कवि दू रास्ता अख्तियार करलें छै–एक तें प्रकृति के सहारा सें, दूसरो ओकरों संवाद सें।

शंबूक जे आश्रम में रहै छै, ओकरों आसपास के रम्य प्रकृति के संगीत आरो निखार शंबूक के ऋषि–व्यक्तित्व बतावै में आपन्हैं सक्षम छै। कवि कें कहै के जरूरते नैं छै। आलोच्य काव्य में चरित्र–उद्घाटन के ई शैली सहदय कें बाँधी कें राखी लै छै।

फेनू जैठां शंबूक के संवाद छै, वहू सें ई काव्य पात्र के, खास करी कें निर्भय वाला व्यक्तित्व प्रगट होय छै, ओकरों तार्किकता तें मोहैवे करै छै। जगदीश गुप्त के खंड काव्य 'शंबूक' में भी शंबूक के ई भय मुक्त स्वभाव के सुन्दर चित्र प्राप्त छै। यहाँ ई जानी लेना चाही कि शंबूक में ई निडरता कवि नें अतीत के छायाहै में गढ़लें छै। शंबूक, रावण के बहिन सूर्पणखा (वज्रमणि) के बेटा छेलै। वज्रमणि आपन्हैं निडर, निर्भय स्वभावों के युवती रहें, यै लें हरेन्द्र के काव्य में शंबूक के जे निर्भयता, स्पष्टवादिता केरों रूप छै, ऊ अनटैटलों नैं लागै छै। जगदीश गुप्त के खंड काव्यो में यहाँ निर्भयता आरो स्पष्टवक्ता के रूप वयक्त होलों छै।

अंगिका के काव्य कृति के शंबूक जबें क्षत्रिय–शूद के बात उठावै छै आरो तारा–सुग्रीव के साथें मन्दोदरी–विभीषणों के, तें वहाँ एक विशेष रूपक–विधान खाड़ों होय छै। ई रूपक में भारत के लोकतंत्र में भ्रष्ट सत्तासीन आरो ओकरों आगू–पीछू करै वास्तें विधि–विधान झलकी उठै छै, जे सब ताखाहै पर पुर्जा

नाँखी ओकरों पक्ष में रखलों रहै छै। ई विधि–विधान तभियै फड़फड़ावै छै, जखनी प्रजा कें दंडित करना होय छै। अजीब ई लोकतंत्र के व्यवस्था छै– अपराध करै छै बड़ों–बड़ौक्का लोग, भोगै छै गरीब–गुरबां। ब्राह्मण कुमार कें काटै छै साँपें आरो मूड़ी कटावै छै शंबूक। कवि हरेन्द्र नें राम राज्य के आड़ में लोकतंत्र के ई सच्चाई दिखावै लें ही ई काव्य के काया गढ़नें छै।

अंगिका भाषा में लिखलों गेलों ई शंबूक खण्ड काव्य, नैं खाली आधुनिक भारत में पद दलित प्रजा, दलित समाज के क्षत्रीय रूप कें ही उद्घाटित करै छै, बल्कि ई बहाना पूरे अंगिका साहित्य के प्रवृतियो कें उद्घाटित करै छै। बिला शक के, आलोच्य 'शंबूक स्वतंत्र भारत में दलित समाज के पीड़ा आरो उपेक्षा सें उठलों उग्र चेतना कें बेखटके राखै में समर्थ छै।'

हेना कें तें ब्रजमणि के पुत्र होला के कारणों शंबूक के संबंध अंग प्रदेश सें नैं ठहरै छै, मतरकि प्रबन्धकार नें शंबुक के चरित्र में कुछ हेनों गुण–शील के रंगों भरलों छै, जे अंग देश के उदात्त, विस्मृत ब्रात्य धर्म सें जुड़लो होलों छै। होन्है कें रामायण के अधिकांश प्रमुख पात्र, राम सें लै कें रावण तांय, के जुड़ाव अंग देश सें रहले छै, कैन्हें कि अंगे एक हेनों देश रहलों छै, जेकरों नीव रामायणो युग सें पहिलें वेदकालीने समाजे में पड़ी चुकलों छेलै आरो जे आपनों ब्रात्य धर्म संस्कृति के कारण उत्तर सें लैकें दक्षिण तक कें प्रभावित करी रहलों छेलै।

बेशक, प्रकारान्तर सें हरेन्द्र के काव्य 'शंबूक' यहू इतिहास कें प्रस्तुत करै छै कि आर्य कालीन समाज में अंग प्रदेश के ब्रात्य–समाज पर, पश्चिम प्रान्त के प्रभाव के कारण, की रं जातीय व्यवस्था के प्रभाव बढ़लै, जेकरों कारण नैं खाली अंग के शासके प्रभावित हुए लागलै, बलुक एकरों सबसें ज्यादा दुष्परिणाम समाज के सरल जीवन जीयै वाला प्रजाहै के भुगतै लें लागी रहलों छै।

हीर प्रसाद 'हरेन्द्र' के ई प्रबंध काव्य खाली काव्यै नैं, आधुनिक भारत के समाज के चित्रे नैं, अंग प्रदेश के एकटा इतिहासो छेकै। जखनी ई शंबूक काव्य पर विचारलों जाय, तें एकराहौ पर ध्यान केन्द्रित करवों जरूरी होतै।

डॉ० अमरेन्द्र

विजया दशमी (28 सितम्बर 2009)

—: सर्ग के बात :—

पहिलों सर्ग (09-15) प्रभु श्री राम के मर्यादित काम आरू विषय प्रवेश।

दोसरों सर्ग (16-22) राम के दरवार, धोबी के आरोप, सीता वनवास।

तेसरों सर्ग (23-30) ब्राह्मण के बेटा के अकाल मृत्यु, राम किंकर्त्तव्य विमूढ़, शूद्र द्वारा विधाभ्यास।

चौथों सर्ग (31-37) शूद्र के खोज, शंबूक के आश्रम, शंबूक के परिचय।

पाँचवों सर्ग (38-47) राम शंबूक संवाद, शंबूक बध।

।। शंबूक ।।

सर्ग- 1

रवि–शशि पोषित ई धरा,
युग–युग केरों भार।
ढोनें आबै सर्वदा,
कर सब के उपकार।।1 ।।

युग–युग में होलै यहाँ,
ईश्वर के अवतार।
व्यापित भी अद्‌भुत रहै,
ज्ञानों के संचार।।2 ।।

सत्यासक्त, दयालद्विज,
हरिश्चन्द्र के नाम।
कोन चूक मरघट फिरै,
रोजे सुवहो–शाम।।।3 ।

त्रेता में श्री राम के,
गाबै सब्भैं गीत।
पढ़लौं–लिखलौं कार्य सब,
छेलै परम पुनीत।।4।।

पुरुषोत्तम श्री राम के,
मर्यादित सब काम।
मर्यादा निर्वाह में,
जकरों पूरा नाम।।5।।

पिता वचन पालन करै,
सहै कष्ट दिन–रात।
सीता, लक्ष्मण साथ में,
मर्यादा के बात।।6।।

पर परिभाषा काल क्रम,
उल्टी–पुल्टी जाय।
मर्यादा के बात भी,
समुचित कहाँ लखाय।।7।।

कृष्ण–कंस के युद्ध में,
कृष्ण कहाबै आर्य।
कंस दुराचारी सदा,
रहै असभ्य, अनार्य।।8।।

कृष्णों के सम्मान में,
शब्द ढूँढ़लों जाय।
कंसों केरों आचरण,
लोगों कें भड़काय।।9।।

पर जब लड़लै इन्द्र सें,
वहें कृष्ण भगवान।
परिभाषा बदलै वहाँ,
जानै सकल जहान।।1 0।।

देवराज देवेन्द्र कें,
समझै सब सिरमौर।
कृष्ण चराबै गाय कें,
घूमै चौरे–चौर।।1 1।।

टकराबै देवेन्द्र सें,
होलै कृष्ण अनार्य।
सब देवों के देवता,
वहाँ कहाबै आर्य।।1 2।।

घातक लागै छै सदा,
जब करना विष पान।
दवा रूप में होय छै,
विष के भी गुणगान।।1 3।।

जे हमरा लें तुच्छ छै,
जे बिल्कुल नाकाम।
वोहीं कहियो गैर लें,
खूब चुवाबै घाम।।14।।

रामचन्द्र भगवान के,
काम बड़ा अनमोल।
टपकै मुँह सें मधुरता,
ज्यों मिश्री के घोल।।15।।

पर सीता के सामनें,
रहै परीक्षा भाय।
जकरा सें सीता सही,
गेलै तब घबड़ाय।।16।।

धरती मैया कें कहै,
अब नैं सहलों जाय।
लें चल अपनों धाम तों,
जल्दी धरती माय।।17।।

ऐलौं गोदी छोड़ जब,
तब सें छी बेचैन।
आँसू सें भरलों रहै,
तभियो दोनों नैन।।18।।

अर्ज सुनै मैया जहाँ,
धड़फड़ करनें आय।
देखी अहिनों दृश्य कें,
सब के सिर चकराय।।19।।

धरती मैया गोद में,
सभा बीच बैठाय।
दुनिया के दुख–दर्द सें,
मुक्त करै समझाय।।20।।

की भोगलकै राज सुख,
वें नहिरा–ससुराल।
कहिया बनलै राम जी,
सीता लेली ढाल।।21।।

चौदह वर्षो बाद जब,
आबै घर श्री राम।
बारी–बारी सें करै,
सब कें राम–सलाम।।22।।

गुरुजन, परिजन बात पर,
गद्दी पर आसीन।
चौदह वर्षो सें रहै,
गद्दी राजा हीन।।23।।

राजा बिन गद्दी कहाँ,
शोभै छेलै भाय।
परजा सोच–बिचार में,
रहै सदा लपटाय।।24।।

अब रामों के राज में,
सम्मानित व्यवहार।
खुशहाली सौंसे नगर,
सब के नेक बिचार।।25।।

रहै कोय धनवान की,
रहै कोय बलवान।
राजों में सब कें सजा,
मिलतै एक समान।।26।।

कपड़ा–लत्ता, अन्न–जल,
लेली नैं मुँहताज।
रोग–शोक कुच्छू कहाँ,
रामचन्द्र के राज।।27।।

रामचन्द्र के राज में,
गलत जरा नैं काज।
सच्चा के साम्राज्य में,
झूठा के नैं राज।।28।।

पर चक्कर में झूठ के,
फसलै कृपा निधान।
आगू छै शंबूक के,
कैसें गेलै प्राण।।29।।

●

होनी–अनहोनी सब होतै,
कौनें पैतै पार।
ईश्वर खुद्दे बनवैनें छै,
माया के बाजार।।30।।

◆

पहुँचैतें बस बतलाना छै,
वन में करै निवास।
छोड़ी देतै लोगें तभिये,
करना सब उपहास।।1 0 ।।

ब्रह्म वाक्य रामों के सुनथैं,
लक्ष्मण मारै हाय।
आज्ञा पालन करना छोड़ी,
बचलै कोन उपाय।।1 1 ।।

जौनें जेना बात सुनलकै,
सब गेलै घबड़ाय।
रानों–सीता के भाग्यों में,
सब कें खोट लखाय।।1 2 ।।

चललै सीता लक्ष्मण साथें,
जंगल केरों ओर।
आँखी सें तें झरतें रहलै,
वैदेही कें लोर।।1 3 ।।

सोचै विधना की लिखनें छै,
हमरा सब लीलार।।
एक्खै पल में बदली दै छै,
जीयै के संसार।।1 4 ।।

घना, मध्य जंगल में पहुँची,
लक्ष्मण रथ कें रोक।
सीता माता के आगू में,
प्रकट करलकै शोक।।1 5 ।।

सीता छोड़ी जंगल बीचें,
लौटें लगलै घोंर।
बादल गरजे, बिजली चमकै,
बून्दा–बून्दी झोंर।।1 6 ।।

पवन बहै पुरवैया तखनी,
लक्ष्मण छूवै पाँव।
सीता जे–से सोचै छेली,
बैठी गाछी छाँव।।1 7 ।।

लक्ष्मण जेन्हें रथ कें हाँकै,
सीता आगू आय।
गुप्त बात कुछ बोलै तखनी,
लक्ष्मण कें समझाय।।1 8 ।।

गूढ़ रहस्य बताबै सीता,
लक्ष्मण सें दिल खोल।
गरभों में छै बच्चा जानों,
रहै बात नैं गोल।।1 9 ।।

शंका सें भरलों छौं मैया,
तोहीं दिहो बताय।
अहिनों नैं शंका के आगें,
फेनूँ दिहो जराय।।20।।

वैदेही के बात सुनी कें,
लखन लाल निस्तेज।
के पतियैतै जंगल छेकै,
फूलों केरों सेज।।21।।

लक्ष्मण घूमी आबी गेलै,
सीता करै बिचार।
शरण गहैं मैया वनदेवी,
जे करतै उपकार।।22।।

ऐलै एगो संत वहाँ पर,
बाल्मीकि रहै नाम।
दिव्य भाल पर शोभै चन्दन,
रहै दया के धाम।।23।।

महामुनि नजदीक आबी कें,
बोलै मधुरे बोल।
जंगल में आबै के पुत्री,
भेद जरा सा खोल।।24।।

पहिनें कुच्छू सहमै सीता,
आँखी भरलों लोर।
सम्हरी फेनूँ आगू आबी,
बोलै छै कर जोर।।25।।

राजा जनकों केरों बेटी,
राम प्रिया जग जान।
जंगल आबै के कारण सें,
हम्में छी अनजान।।26।।

देवर लक्ष्मण पहुँचैनें छै,
प्रभु के आज्ञा मान।
हमरा तकदीरों में लिखलों,
छै जंगल सुनसान।।27।।

कहै बाल्मीकि नैं कर बेटी,
आगू पश्चात्ताप।
हमरों परम शिष्य वैदेही,
छेकै तोरों बाप।।28।।

बापे, दादा, गुरुजन समझों,
ई कहै छिहों स्पष्ट।
हमरा आश्रम में नैं होतै,
तोरा कोनों कष्ट।।29।।

मुनि सीता कें आश्रम लानी,
आदर सें बैठाय।
आश्रमवासी कें सीता के,
लाचारी समझाय।।30।।

रघुकुल तिलक रामचन्द्रों के,
नारी सब्भैं जान।
आश्रमवासी करें लागलै,
जे समुचित सम्मान।।31।।

रामों के राजों में ई सब,
की कहभो अन्याय।
मर्यादित सब काम राम के,
मन देथौं चकराय।।32।।

●

मन के राजा रामचन्द्र छै,
सत्य धर्म अपनाबै छै।
राजा के आगू तें अहिनों,
ढेर समस्या आबै छै।।33।।

◆◆

सर्ग-3

परजा के लाखों माथा में,
बात कहाँ की-की अटतै।
खूब बिचारै केरों छेकै,
ग्रह-गोचर केना कटतै।।1।।

एकाएकी ऐथैं आगू,
सब्भै कें फड़ियाना छै।
जनता के आगू में अपनों,
उज्ज्वल कृति दिखलाना छै।।2।।

यहें सोच रामों के रहलै,
धर्म ध्वजा फहराबै छै।
एक समस्या बढ़लों-चढ़लों,
फेनूँ आगू आबै छै।।3।।

एगो बाबा जी के बेटा,
कालों गाल समाबै छै।
बाबा जी तें गिरलों-पड़लों,
आबी धूम मचाबै छै।।4।।

युगों केरों प्रभाव तखनको,
कुच्छू तें अहिनों छेलै।
बापों के आगू में बेटा,
मुसीबतों तक नैं झेलै।।5।।

मरना नैं मुमकिन बेटा के,
बापों के जीतों रहतें।
त्रेता के कुछ बाते अहिनों,
सुनै छियै सब कें कहतें।।6।।

लाश रखलकै दरवाजा पर,
ललकारै छै रामों कें।
अन्यायी छै रामचन्द्र ई,
बतलाबै छै गामों कें।।7।।

रघु, दिलीप, शिवि, सगर प्रतापी,
राजा राज चलैनें छै।
अपनाँ नामों केरों झंडा,
युग–युग में फहरैनें छै।।8।।

सब के कथा –कहानी जानौं,
धर्म ग्रंथ उलटैनें छी।
कृति गाबै छै तीनों लोकें,
खोट जरा नैं पैनें छी।।9।।

ऊ सब कें गद्दी पर रहतें,
बात कभी नैं ऐलों छै।
बापों आगू मरन पुत्र के,
कहीं जरा नैं गैलों छै।।10।।

अनहोनी घटना ई घटलै,
रामचन्द्र के राजों में।
देखै छी साफे झलकै छै,
कोढ़ समैलै खाजों में।।11।।

रामों कें गद्दी बैठै सें,
पाप राज में बढ़लों छै।
रामों के पापों सें अखनी,
हमरों बेटा मरलों छै।।12।।

कहाँ गेल्हें वशिष्ठ महामुनि,
हमरा आगू आबों तें।
कैसें हमरों बेटा मरलै,
हमरा तों समझाबों तें।।13।।

कोन पाप सें जंगल गेलै,
पंचवटी अपनाबै लें।
सूर्पनखा तभिये तें ऐलै,
नाक–कान कटबाबै लैं।।14।।

जकरा देहें खून जरा नैं,
उनकों अलग कहानी छै।
बाहुबली के आगू ककरों,
चललों कब मनमानी छै।।1 5।।

मान–प्रतिष्ठा जोगै लेली,
रावण मारै वाणों सें।
करी ब्रह्म हत्या सीता कें,
लानै शान–गुमानों सें।।1 6।।

पाप ब्रह्म हत्या सें बढ़लों,
धरती पर नैं जानै छै।
रावण बड़का पंडित ज्ञानी,
तीनों लोकें मानै छै।।1 7।।

हमरों बेटा के हत्यारा,
अत्याचारी रामे छै।
झलकै छै अन्याय पूर्ण सब,
आय राम के कामे छै।।1 8।।

करो बिचार अयोध्यावासी,
मुँह हमरों की ताकै छों।
सही बात आगू में बोलों,
बगलों सें की झाँकै छों।।1 9।।

शुरूआत अभी छौं हमरा सें,
ऐथौं सब के पारी तें।
एक आदमी के पापों सें,
बदलै दुनियादारी तें।।2 0।।

हल्ला–गुल्ला खूब करलकै,
रामचन्द्र दरबारों में।
रामचन्द्र के नैया फसलै,
तब बीचे मझधारों में।।2 1।।

निकली गेलै कथा–कहानी,
रामचन्द्र के माथों सें।
श्रवण पिता सें पहिनें मरलै,
राजा दशरथ हाथों सें।।2 2।।

मेघनाद रावण के आगू,
अपनों प्राण गमैनें छै।
तइयो बाबा जी के बातें,
रामों कें भरमैनें छै।।2 3।।

कोन मुसीबत केना कटतै,
रामचन्द्र पछताबै छै।
सीता कें जंगल भेजाना,
याद वहाँ पर आबै छै।।2 4।।

किंकर्त्तव्यविमूढ़ राम छै,
कठिन समस्या जानी कें।
दूतों कें भेजी बोलाबै,
बढ़िया पंड़ित–ज्ञानी कें।।2 5।।

आबी गेलै वही समय में,
पंडित हाथें लें पतरा।
बतलाबै छै राम राज पर,
आबी गेलों छै खतरा।।2 6।।

रामचन्द्र घबडाबै, बोलै,
पंडित जी बात बताबों।
मन बेकाबू होलै हमरों,
आबें नैं ढेर सताबों।।2 7।।

पंडित नारी खूब टटोलै,
रामचन्द्र भगवानों के।
पंडित जी कें पोथी–पतरा,
कमी जरा नैं ज्ञानों के।।2 8।।

बोलै राजों में शूद्र कहीं,
विद्या के अभ्यास करै।
ओकरे कृति पताका फहरै,
वें कर्त्ते कें नाश करै।।2 9।।

पूजा, जप, तप, योग शूद्र के,
सब अनुचित कहलाबै छै।
पोथी–पतरा, धर्म ग्रंथ सब,
अहिनें बात बताबै छै।।3 0।।

ब्राह्मण केरों बेटा मरलै,
वोही शूद्रों के चलतें।
पंडित जी कुछ व्याकुल झलकै,
बात यहें कहतें–कहतें।।3 1।।

दरवारों में मातम छैलै,
घटना ई अनहोनी छै।
पता लगाबें ऊ शूद्रों के,
फानै कोना–कोनी छै।।3 2।।

राम उठाबै धनुष बाण खुद,
खोजै में घूमै सगरे।
खोज करलकै दिशा–दिशा में,
खोज करै नगरे–नगरे।।3 3।।

गाँव–मुहल्ला पागल नाँकी,
धनुष–वाण लें हाथों में।
कुच्छू पंडित पतरा लें कें,
पीछू–पीछू साथों में।।3 4।।

मन भरमाबै रामों केरों,
पंडित के चाल अनूठा।
सब दिन सदा पढ़नें ऐलै,
सब्भै कें सच्चा–झूठा ।।3 5 ।।

एगो भूल छिपाना गर छौं,
झूठ अनेकों बोलै छों।
जानी–बूझी सब बातों के,
भेद जरा नैं खोलै छों ।।3 6 ।।

बड़का–बड़का के मंसूबा,
पोथी में भुतलाबै छै।
तखनी अपनों सोच–समझ तें,
जरा काम नैं आबै छै ।।3 7 ।।

❋

जे परमेश्वर अन्तर्यामी,
तीन लोक के स्वामी।
उनका दर–दर भटकाबै छै,
ठौर–ठौर खल–कामी ।।3 8 ।।

◆◆◆

सर्ग- 4

चाँद–चाँदनी, बादल–पानी,
जुड़लों एक्के बंधन।
विषधर साथें जीना–मरना,
सोची लै छै चन्दन ।।1 ।।

माली के जीवन जेना कें,
बीतै फूलों साथें।
रंग मेहदी के लागै छै,
उपकारी के हाथें ।।2 ।।

राजा–परजा वोही रङ् छै,
भेद–भाव नैं मन में।
राज पाट छोड़ी रामो तें,
खोजै छै वन–वन में ।।3 ।।

परजा पालक राजा जे छै,
परजा हित के लेली।
जगदम्बा सीता माता कें,
जंगल दै छै ठेली ।।4 ।।

राजा परजा के चक्कर में,
घूमै जंगल–जंगल।
भूखों प्यासों सें छै व्याकुल,
की जंगल में मंगल।।5।।

हर परजा कें सुखी बनाना,
फर्ज हमेशा मानै।
सब कें खुश राखै के लेली,
जंगल–जंगल छानै।।6।।

पर कोनों भी न्याय हमेशा,
एक्के पक्षें होतै।
सदा दोसरों पक्ष वहीं पर,
गिरतै–पड़तै, रोतै।।7।।

पोथी–पतरा के चक्कर में,
नाटक करतै राजा।
ऊ राजा के भरले रहतै,
जनता सें दरवाजा।।8।।

एक समस्या मिटतै जेन्हैं,
आगू के तैयारी।
रात–दिन तें ऐथैं रहतै,
हरदम पारा–पारी।।9।।

मर्यादा सब भूली गेलै,
ब्राहमण केरों आगू।
ब्राहमण के रक्षा क्षत्री के,
धर्म वहाँ छै लागू।।1 0।।

सगरे घूमै पर नैं पाबै,
थक्की डालै डेरा।
सावित होलै सचमुच वैठाँ,
दीपक तले अंधेरा।।1 1।।

एगो आश्रम पाँव रखलकै,
स्वर्ग जेना लागै।
निरखी शोभा बाग–बगीचा,
थकावटे सब भागै।।1 2।।

दुभड़ी वाला घास पसरलों,
लागै बिछलों चादर।
ऊ आश्रम में सम्भव छेलै,
सब्भै केरों आदर।।1 3।।

चिड़ियाँ चुनमुन–चुनमुन करनें,
मचलै डाली–डाली।
आमी गाछी कखनूँ कुहुँकै,
कोयल काली–काली।।1 4।।

भौंरा भनभन करनें आबै,
होलों जे मतवाला।
जकरों मन छै देहों नाँकी,
मानों सचमुच काला।।15।।

तोता के बोली में मिश्री,
ऋषिवर साथें गाबै।
आगन्तुक सें बात करै लें,
तोते आगू आबै।।16।।

रंग–बिरंगा फूल खिललका,
क्यारी–क्यारी सोहै।
इन्द्रधनुष रंग तितली केरों,
पंख हमेशा मोहै।।17।।

आश्रम में बैठै के जग्घों,
गाछी केरों नीचें।
ऋषिवर ठीक जमैनें छेलै,
आसन वोही बीचें।।18।।

कूशों के आसन पर बैठी,
वेद–शास्त्र उल्टाबै।
ब्रह्म–जीव संबंध अनोखा,
सब्भै कें बतलाबै।।19।।

सेवक सब सत्कार करै में,
लगलों छेलै पूरा।
सब्भै के माथा पर झलकै,
छै चोटी गोखुरा।।20।।

सादा जीवन उच्च विचारों,
के सब्भे अनुयायी।
सब कामों में गुरुदेवों कें,
देते रहै दुहाई।।21।।

स्वर्ग धरा पर उतरी ऐलों,
वैठाँ सब्भैं मानै।
कोन साधु–संतों के डेरा,
पर नैं तनियों ज़ानै।।22।।

राम पहुँचलै आश्रम जखनी,
तन–मन गदगद होलै।
आश्रम में आगत के स्वागत,
ऋषिवर धीरे बोलै।23।।

चेला–चटिया देखी सब कें,
स्वागत के तैयारी।
छेकै मंत्र '**अतिथि देवो भव**',
सब्भै लें सुखकारी।।24।।

स्वागत सें संतुष्ट राम नैं,
ध्यान काम पर ज्यादा।
ज्ञानवान शंबूक कहाबै
आश्रम में मर्यादा।।25।।

परिचय–पाती महा जरूरी,
रामों लेली छेलै।
उनका आँखी बाबा जी के,
शव हरदम्में हेलै।।26।।

रामचन्द्र जब परिचय पूछै,
शंबूक बताबै छै।
दलदल में फसलों छी हम्में,
ई गीत सुनाबै छै।।27।।

जन्म–जात शंबूक शूद्र छी,
महर्षि आय कहाबौं।
आश्रम में बैठी ईश्वर के,
महिमा हर पल गाबौं।।28।।

लोभ–मोह–मद काम भगाबौं,
धर्म–कर्म सें नाता।
समदर्शी परमेश्वर हमरों,
हरदम गुरु–पितु–माता।।29।।

शांति बसै हमरा आश्रम में,
शांति दूत कहलाबौं।
ईश्वर दया दृष्टि हमरा पर,
रूखा–सूखा पाबौं।।30।।

भक्ति भाव में लीन हमेशा,
मोह पाश नैं घेरै।
हर संकट के क्षण में प्रभुवर,
आँख हमेशा हेरै।।31।।

●

जाति–पाति के नामें ऐठाँ,
नैं उच्चों नैं नीच।
सब जन एक समान यहाँ पर,
प्रेम सदा सब बीच।।32।।

♦♦♦♦

सर्ग- 5

सुनथैं पिलही चमकी गेलै,
सोचै तखनी राम।
आबें ऐलों छै आगू में,
जे छेले गुमनाम।।1।।

शंबूक देखाबै नम्रता,
आग बबूला राम।
रामें चाहै करना जल्दी,
सब्भे काम तमाम।।2।।

शंबूक कहै बढ़िया नाँकी,
धन्य-धन्य छों भाग।
देह जरै बढ़िया बातों सें,
रामें उगलै आग।।3।।

शूद्र होय तों पाप कमाबें,
कर विद्या अभ्यास।
तोरों पाप निवारण लेली,
ऐलौं तोरों पास।।4।।

ब्राह्मण होय के धृष्टताई,
अगर करै छै शूद्र।
धर्म ग्रंथ अनुसार बताबौं,
बिचार छेकै क्षूद्र।।5।।

ई अपराध अक्षम्य कहाबै,
तों वध केरों योग।
धरती पर पूरा होलै सब,
आजे तोरों भोग।।6।।

तोरा पापों सें मरलों छै,
ब्राह्मण केरों लाल।
आबी गेलै सचमुच तोरों,
यही समय में काल।।7।।

शंबूक सुनाबै रामचन्द्र,
क्षत्री कुल अवतार।
बालि बधै में देह छिपाबै,
जानै छै संसार।।8।।

निर्दोष बालि के आगू में,
ऐतें लागै लाज।
जकरा चलतें सुग्रीवों पर,
गिरलै पूरा गाज।।9।।

ऊ तें पर्वत छेलै अहिनों,
जहाँ बचाबै प्राण।
तोरा बल पर गेले छेलै,
सब्भे शान–गुमान।।10।।

क्षत्री केरों धर्म कहै छै,
मरला कें नैं मार।
शरण पड़ै जे आबी केन्हौं,
तकरा शीघ्र उबार।।11।।

लघुशंका खातिर जे बैठै,
तकरा लाठी मार।
क्षत्री कुल के मर्यादा नैं,
पग–पग पर धिक्कार।।12।।

बालि समर में शोर मचाबै,
बैठै राम नुकाय।
ई कामों के राज जरा सा,
हमरा दें समझाय।।13।।

तोरा सें नैं झगड़ा–झंझट,
नैं तोरा सें रार।
बालि मरै तोरा हाथों सें,
की छेलै दरकार।।14।।

मुनि वशिष्ठ वैझें बैठी कें,
सूनै छेलै बात।
बोलै रे शंबूक यहाँ छौं,
धर्म ग्रंथ के साथ।।15।।

'छोटका भाय केरों पत्नी,
लागै बेटी मान।
बुरा नजर जकरों बेटी पर,
उ तें पापी महान।।16।।

ओकरों वध जरूरी समझें,
राम करलकै ठीक।
सब लोगों कें ई बातों सें,
लेना चाही सीख'।।17।।

शंबूक कहै 'सचमुच महर्षि,
तों तें बाजा ढोल।
राजा जहिनों राग अलापै,
तहिनें तोरों बोल।।18।।

छोटका भाय केरों पत्नी,
सही बेटी समान।
बड़का भैया केरों पत्नी,
बोल जरा नादान।।19।।

'बड़का भैया केरों पत्नी,
जेना अपनों माय।'
मुनि वशिष्ठ बोलै सनकी कें,
धीरज जरा गमाय ।।20।।

शंबूक बताबै जोरों सें,
'बालि बसै सुरधाम।
रावण केरों रामें जखनी,
करलक काम तमाम ।।21।।

तारा कें सुग्रीव रखै छै,
हरदम अपनों पास।
मन्दोदरी–विभीषण बनलै,
अपनों दोनों खास ।।22।।

धनुष–वाण हेराबै तखनी,
राम वहाँ चुपचाप।
बैठी खाली करतें रहलै,
माला केरों जाप ।।23।।

बलात्कार सें कोनों नारी,
दूषित जब नैं होय।
सही अहिल्या केरों गाथा,
जानै छै सब कोय ।।24।।

अग्नि परीक्षा सीता केरों,
जानै छै संसार।
सीता खातिर होलों छेलै,
रावण सें तकरार ।।25।।

फेनूँ कारण कोन निकललै,
सीता के वनवास।
लव–कुश दोनों भटकै अखनी,
सीता केरो पास ।।26।।

की खैतै, की पीतै दोन्हूँ,
ककरा छै दरकार।
झलकै छै रामों कें अखनी,
झूठ–मूठ तकरार ।।27।।

सही तथ्य पर परदा डाली,
इधर–उधर के बात।
भला आदमी केरों साथें,
छेकै ई आघात' ।।28।।

गुरु वशिष्ठ के एक बात पर,
सब खोलै शंबूक।
हमरा बातों सें देहों में,
तोरा उठथौं हूक ।।29।।

राम कहै 'बकवास बन्द कर
गुरु वशिष्ठ के ज्ञान।
जन साधारण लेली मुश्किल,
करना छै पहचान।।30।।

बस में जकरा इष्ट सदा सें,
छेकै वहें वशिष्ठ।
इनका आगू बोली भाषा,
होना चाही शिष्ट'।।31।।

'भाषा–बोली शिष्ट कहाँ सें,
ऐतै जे छै नीच।
ऋषिवर बोलै ऊ सब सीखों,
गुरु वशिष्ठ के बीच।।32।।

आपनों पाप महर्षि माथें,
मढ़ना तोरों नीति।
मर्यादा पुरुषोत्तम लेगाँ,
बचलै कहाँ अनीति।।33।।

राजा कें के कहें पारतै,
देखी कुच्छू दोष।
सब गलती झाँपै के लेली,
खुल्ले पूरा कोष।।34।।

सही पिता के नातें तोरों,
लव–कुश सें व्यवहार।
जौनें समुचित आज बताबै,
तकरे छै दरकार।।35।।

पत्नी केरों लालन–पालन,
पति के पावन धर्म।
जंगल भेजी राज चलाना,
छेकै ई दुष्कर्म।।36।।

सीता पर जे बीती रहलै,
ककरा छै आभास।
लव–कुश केना जीबी रहलै,
सीता केरों पास।।37।।

ऊ पापों सें ब्राह्मण केरों,
बेटा कें नै कष्ट।
राजा के संरक्षण पाबी,
ब्राह्मण होलै भ्रष्ट।।38।।

जे मन आबै बात बनावै,
छेकै ई सत्कर्म।
राजा कें कुमार्ग बताना,
समझै अपनों धर्म।।39।।

हम्में दलदल में छी फसलों,
सम्हरी लौं जों सांस।
कैसें होलै हमरा चलतें,
ब्राह्मण केरों नाश'।।40।।

'अपनों बचाव लेली बढ़िया,
तोरों छै ई तर्क।
पर हमरा क्रोधों पर ऐतै,
तनियो टा नैं फर्क।।41।।

जे अपराध अक्षम्य कहाबै,
समुचित देना दण्ड।
नैं तें करतै देखा-देखी,
होतै लोग उदण्ड।।42।।

खींची लेलक झट तरकश सें,
रामें एगो वाण।
शंबूकों के ऊपर करलक,
वाणों के संधान।।43।।

शंबूक गिरै भू पर तखनी,
भुतलाबै छै ज्ञान।
छिपलै देखी बादल नीचें,
दिन रहतें दिनमान।।44।।

शोभाहीन लगै फुलवारी,
मातम चारो ओर।
तोता चुप्पी साधी बैठै,
लोर बहाबै मोर।।45।।

कन्ना रोहट साथें मचलै,
आश्रम में कुहराम।
ब्राह्मण साथें सिधियाबै छै,
पुरुषोत्तम श्री राम।।46।।

जकरों शासन शूद्र नैं,
करतै विद्याभ्यास।
बाघ-छाग संगें फिरै,
कैसें ई विश्वास।।47।।

◆◆◆◆◆

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' : एक परिचय

जन्म : 06/09/1950, कटहरा, सुलतानगंज, (भागलपुर)

सम्मान/पुरस्कार/उपाधि :

1. डॉ0 अम्बेदकर फेलोशिप, राष्ट्रीय सम्मान (05/12/2001)
   (दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली)
2. खूब लाल महतो स्मृति पुरस्कार (उत्तंग हमरों अंग लेली)
   (अ0 भा0 अंगिका साहित्य कला मंच) (09/06/2001)
3. जगदीश पाठक मधुकर– कुल विभाकर (05/05/2002)
   (समय साहित्य सम्मेलन, पुनसिया, बाँका)
4. इन्दिरा देवी स्मृति सम्मान (12/08/2003) (बरियारपुर, मुंगेर)
5. जनार्दन बाबू रजत स्मृति सम्मान (08-09/11/2003)
   (अ0भा0 अंगिका साहित्य कला मंच, खगड़िया)
6. पंडित गोपी नाथ तिवारी पुरस्कार (25/12/2005)
   जाह्नवी अंगिका संस्कृति संस्थान, पटना
7. सरला स्मृति साहित्यकार सम्मान (अंगप्रिया के सफल सम्पादन लेली)
   जानकीपुर पबई (बाँका) (09/12/2007)
8. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र रजत स्मृति सम्मान ('ठकहरा' लेली) (15/06/2008)
   (हिन्दी भाषा साहित्य परिषद्, खगड़िया)
9. पंडित जगदीश पाठक मधुकर, काव्य साहित्य साधना स्मृति सम्मान
   (भागलपुर प्रमण्डलीय अ0भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन)
10. स्व0 वैकुण्ड विहारी स्मृति सम्मान (तारापुर, मुंगेर)

1. कवि रत्न (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ)
2. अंग श्री (अ0 भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन प्रमंडलीय शाखा, भागलपुर)
3. अंग श्री (क्षेत्रीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन, खड़िया, मुंगेर)
4. साहित्य श्री (अ0 भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन, भोपाल)
5. साहित्य रत्न (मंगनी लाल स्मृति ट्रस्ट, बौंसी, बाँका)
6. अंग शिरोमणि (राज्य स्तरीय सर्व भाषा सद्भावना काव्योत्सव, उधाडीह, भागलपुर)
7. कवि शिरोमणि (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, गाँधीनगर, ईशीपुर, भागलपुर)
8. पंचशील शिरोमणि (पंचशील चैरिटेबुल सोसायटी, 25/4 कड़कड दुम्म एरिया, सेंट्रल बैंक के ऊपर, नई दिल्ली 110092–भारत)
9. अंग–पतंग (अ0भा0 अंगिका साहित्यय सम्मेलन, जिला शखा–भागलपुर)
10. अंगिका सपूत (अ0भा0 अंगिका साहित्य कला मंच प्रखण्ड शाखा–शंभुगंज)

प्रशस्ति पत्र (ढेर साहित्यिक संस्थाओं द्वारा)

देश के स्तरीय पत्रिकाओं में रचना प्रकाशित और आकाशवाणी भागलपुर से अंगिका कहानी– कविता सम्प्रसारित

सम्प्रति – सम्पादक – मंजिल / अंगप्रिया

महामंत्री– अखिल भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच

शिक्षक – रा0 मध्य विद्यालय, कुमारपुर, कटहरा, सुलतानगंज, भागलपुर

सम्पर्क– ग्राम+पो0–कटहरा, सुलतानगंज (भागलपुर)–813213
मो0–9931854246/9334753128